ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 5, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

हिन्दी ग़ज़ल में नारी विमर्श

डॉ. भुवनेश कुमार परिहार

सहायक आचार्य, हिन्दी राजकीय महाविद्यालय, सांभरलेक, जयपुर, राजस्थान

सार

इक्कीसवीं सदी में साहित्य की अन्य विधाओं की भांति ही हिन्दी गजल में भी अनेक परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं। अन्य बातों के साथ ही हिन्दी के गजल ने स्त्री समाज की स्थितियों पर भी गंभीरता से विचार किया है। उन्होंने इस बात को महसूस किया है कि सृष्टि के आरंभ से ही समाज के विकास में स्त्रियों की भूमिका पुरुषों से महत्वपूर्ण रही है और इसलिए एक समय में समाज मातृप्रधान था। आगे चलकर स्त्रियों की भूमिका घर के भीतर तक सीमित कर दी गई और उनके बंधनों को उनका आभूषण बनाकर पेश किया गया। उन्हें गुलाम बनाने के लिए अनेक प्रकार की साजिशें रची गयीं। कल्पना में उन्हें देवी और पूज्या बताया गया। किंतु व्यवहार में उन्हें भोग्या और दासी बना दिया गया। कभी उन्हें बाजार में बेचा गया और कभी दान की वस्तु बनाया गया। ऐसा नहीं था कि नारियों में प्रतिभाशक्ति या शक्ति की कमी थी, लेकिन जब भी वे पुरुषों के सामने चुनौती बनकर खड़ी हुईं उन्हें भयभीत करके दबा दिया गया। गार्गी और याज्ञवल्क का शास्त्रार्थ इसका एकमात्र नहीं, सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। आगे चलकर सती प्रथा, बहुविवाह प्रथा और विधवाओं की समस्याएं उसी गुलामी और असुरक्षा की भावना की परिणति थीं। भारतीय नवजागरण के नायकों ने नारी की शक्ति को पहचानकर नारी जागरण और मुक्ति की बात को स्वाधीनता-संघर्ष के साथ जोड़ा था। भारतेन्दु का 'नारी नर सम होहिं' का नारा इसी भाव से प्रेरित था।

परिचय

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद सबके साथ ही स्त्रियों की स्थिति में भी, खासकर शिक्षित स्त्रियों की स्थिति में कुछ सुधार हुआ। किंतु स्त्रियों की बहुसंख्यक आबादी फिर भी पूर्वदशा में बनी रही और बनी हुई है। अब भी उनके कदम-कदम पर वर्जनाएं हैं और अब भी बहुत सारी स्त्रियां घरों की चहारदीवारी में जीवन गुजार देती हैं और बाहर के संसार से अपरिचित रहती हैं। बचपन में पिता, जवानी में पति और बुढ़ापे में पुत्र की गुलामी में रहना उनकी नियति बनी हुई है। शिक्षित औरतों को, उनमें भी कामकाजी औरतों को एक प्रकार की आाादी अवश्य मिली, किंतु घर से बाहर निकलते ही यौनादि एवं दूसरे शोषणों का शिकार होने लगीं। पूंजीवादी बाआारवाद ने उन्हें विज्ञापन की चीज बना दिया और अब तो बिना स्त्री देह की चमक के किसी विज्ञापन में प्रभाव ही नहीं पैदा होता है।[1,2,3] महानगरों के उत्तर आधुनिक और भोगवादी समाज व संस्कृति में तमाम अच्छे घरों की लड़कियां भी कालगर्ल्स के रूप में वेश्यावृत्ति की ओर बढ़ रहीं हैं। हमारी अर्थवादी व्यवस्था और पुरुषप्रधान समाज ने इसे रोजगार मानना आरंभ कर दिया है और उन्हें सेक्सवर्कर के नाम से हर चीज में लाभ तलाशा जाने लगा है और दहेज जैसी समस्याएं लगातार भयावह होती गई हैं। हिन्दी ंगालकारों ने इन सारी स्थितियों को बहुत गंभीरता और सहानुभूति के साथ चित्रित किया है। पुरुष-प्रधान भारतीय समाज में नारी की स्थिति यह है-

हिन्दुस्तानी औरत यानी
घर भर की खातिर कुर्बानी
गृहलक्ष्मी पद की व्याख्या है
चौका-चूल्हा-रोटी-पानी
कत्ल हुआ कन्या-भ्रूणों का
तहाीबें दिखीं बेमानी
-शिवओम् अम्बर
इसको मिलेगा प्यार या स्टोव पिया से,
बाबुल तुम्हारी बिटिया जो घर छोड़ रही है।
-अशोक अंजुम
दिल में सौ दर्द पाले बहन-बेटियां,
घर में बांटें उजाले बहन-बेटियां।
हो रहीं शादियों के बहाने बहुत,
भेड़ियों के हवाले बहन-बेटियां।
-ओमप्रकाश यति
हजार चुप से घिरी हलचलों के घेरे में,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

रुकी-रुकी सी हिचकती सी कोई सांस हो तुम।
-विजय बहादुर सिंह
कहीं तलाक कहीं अग्नि परीक्षाएं हैं,
आज भी इन्द्र हैं, गौतम हैं, अहिल्याएं हैं।
प्यार की राह में दुष्यंत जिन्हें छोड़ गए,
ये ब्याह-शादियां हैं खेल गुड्डे-गुड़िया के
कहीं भी हांक दो खूंटे से बंधी गायें हैं।
-वशिष्ठ अनूप

विचार-विमर्श

हिन्दी साहित्य का इतिहास काफी प्राचीन रहा है। कई प्रवृतियां ,वादों एवं विधाओं का विकास हिन्दी साहित्य में हुआ है। जब हम समकालीन हिन्दी साहित्य की बात करते हैं तो उनमें एक नवीन विधा ग़ज़ल से हम रूबरू होते हैं। एक समय ऐसा आता है जब नीरस कविता से ऊब चुका पाठक किसी एक ऐसी विधा को पढ़ना चाहता है[5,7,8] जो उसके जीवन के अनुभवों को एक नया आयाम प्रदान करे तथा उसके जीवन के सुखद क्षणों को ही नहीं बल्कि उसके जीवन के कटु सत्यए वेदना तथा तात्कालिक समाज की सच्चाइयों को समझे और उनको समाज के समक्ष प्रस्तुत करे। उसी समय दुष्यन्त कुमार का ग़ज़ल.संग्रह ष्साये में धूपष् पाठकों के सामने न केवल श्रृंगारिक ग़ज़ल की विविधताए व्यापकता एवं संजीदगी के साथ उपस्थित होता है बल्कि ग़ज़ल को व्यक्ति और समाज के लिए उपयोगी भी बनाता है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों को सामने लाने का काम बख़ूबी किया है। भूमंडलीकरण के इस दौर में मनुष्य विकास की अंधी दौड़ में दिन.प्रतिदिन बस भागे ही जा रहा है। सच तो यह है कि उसे स्वयं अपने लिए भी कुछ करने की फुर्सत नहीं है तो ऐसे में वह समाज और देश के लिए क्या सोचेगाघ् अभिव्यक्ति के अनेक साधन होने के बावज़ूद आज का मनुष्य अपनी भावनाओं को समझने एवं उन्हें प्रेषित करने में स्वयं को असमर्थ महसूस करता है। इन सभी मुद्दों के बीच की कड़ीए रुमानियत और अहमियत दोनों को सुप्रसिद्ध उर्दू शायर कैफ़ी आज़मी की ग़ज़ल का यह शेर बखूबी अभिव्यक्ति प्रदान करता है द श्प्यार का जश्न नयी तरह मनाना होगा ध् ग़म किसी दिल में सही ग़म को मिटाना होगा ।

समकालीनता के परिदृश्य से विचार किया जाये तो सन 1960 ईव के बाद से चाहे उस्ताद नज़ीर अकबराबादी हों या फिर कैफ़ी आज़मी सभी लोगों की शेर.ओ.शायरी में स्त्री.अस्मिता की झलक बख़ूबी दिखाई देती है। रचनाकारों ने अगर स्त्री को मयए प्यालाए सुरा से जोड़ा है तो वह उस समय का वातावरण था इससे यह बिल्कुल नहीं सोचा जाये कि ये शब्द सिर्फ स्त्री को भोग्य के रूप में प्रदर्शित करते हैं बल्कि ये शब्द नवचिंतन को भी जन्म देते हैं कि क्या स्त्रियाँ इस उपमा के लिए उपयुक्त हैंघ् क्या समाज में इनकी जगह यही हैघ् इन शब्दों के माध्यम से स्त्री के प्रति ग़ज़ल में जो सहानुभूति व चिंतन का सूत्रपात हुआ वह धीरे.धीरे त्रिलोचन और दुष्यन्त के आगे आज अद्यतन प्रगति कर रहा है और करता ही जा रहा है। अब ग़ज़ल सिर्फ रुमानियत में सिमटी नहीं रही बल्कि वह स्त्री अस्मिता की एक आवाज़ भी बन चुकी है। हिन्दी ग़ज़ल समकालीनता के विभिन्न आयामों को आत्मसात करती हुई उसे आम जनजीवन के साथ जोड़ देती है और आम लोगों के विचारए भावनाए व्यवहार तथा वेदना को उजागर करती है। समकालीन हिन्दी ग़ज़ल आज समय के स्वर से स्वर मिला रही है। हिन्दी ग़ज़ल में हर प्रकार के अस्तित्ववादी और अस्मितावादी पहलू पर बात की गई है। अतः यह स्वाभाविक है कि वर्तमान में साहित्य.चिंतन का मुख्य विषय स्त्री.अस्मिता और नारीवादी चिंतन से उसका दामन खाली नहीं हो सकता। हिन्दी ग़ज़ल ने समय के अनुरूप स्त्री के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन किया है। अब नारी के केवल ईश्वरीय तथा सौन्दर्यात्मक रूप का ही वर्णन नहीं किया जाता बल्कि उसके जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाईयों एवं परिवर्तनों को भी ग़ज़ल में स्थान दिया जाने लगा है। आज के समय में स्त्री का जीवन पहले से कहीं अधिक दूभर हो गया है। उसकी इस परेशानी को समझते हुए दुष्यन्त कुमार लिखते हैं द श्कौन शासन से कहेगाए कौन समझेगा ध् एक चिड़िया इन धमाकों से सिहरती है। श् आज का समाज एक स्त्री के लिए काफ़ी असहजतापूर्ण परिवेश का निर्माण कर रहा है। ऐसे में वह समाज के दहशतगर्दों से स्वयं का बचाव भी करना चाहती है। यह बात दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल में कुछ इस रूप में अभिव्यक्त हुई है द श्शहर की भीड़.भाड़ से बचकर ध् तू गली से निकल रही होगी। [9,10,11]

आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति भी सजग है। आवश्यकता है तो केवल एक चिंगारी की जो उसके अन्दर सुप्त ज्वालामुखी को जागृत करने में सक्षम हो। नारी के माँए भार्याए बहन आदि तथा विभिन्न दैवीय रूपों का ही वर्णन प्रायः साहित्य में देखने को मिलता है। ग़ज़ल के माध्यम से कई ग़ज़लकारों द्वारा नारी की स्वतन्त्रता तथा उसके जीवन के यथार्थ को उद्घाटित करने का प्रयास समय.समय पर किया गया है सदियों से पद.दलित नारी के जीवन में क्रान्ति का बीज बोने का कार्य भी ग़ज़लकारों ने किया है। साथ ही साथ ग़ज़लकार यह बताने की कोशिश भी करते रहे हैं कि अगर नारी का सही मार्गदर्शन किया जाए तो वह अपने जीवन में परिवर्तन ला सकती है और समाज की दिशा और दशा में भी परिवर्तन एवं सुधार ला सकती है। दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल का शेर इस बात को बख़ूबी बयाँ करता है द श्एक चिनगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तो ध् इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है। श् विपरीत

परिस्थितियों का सामना करते हुए समाज में अपना एक विशेष मुकाम हासिल करने वाली नारी के प्रति नरेन्द्र वसिष्ठ कुछ इस तरह से अपने भावों को व्यक्त करते हैं . श्अकसर नींद मेरे ख़्वाबों को यह मंजर दे जाती है ध् एक शिकस्ता नाव है लेकिन तूफाँ से टकराती है।

एक स्त्री के मन की दशा और उसके जीवन को नदी के माध्यम से ग़ज़लकार दुष्यन्त कुछ इस तरह से व्यक्त करते हैं द्द श्निर्वचन मैदान में लेटी हुई है जो नदी ध् पत्थरों सेए ओट में जो.जाके बतियाती तो है। श् सही परिप्रेक्ष्य में अगर विचार किया जाये तो इसमें भी पुरुष की सहज मानसिकता का रूप परिलक्षित होता है जो एक स्त्री के जीवन में पुरुष के वर्चस्व को बनाये रखना चाहता हैए परन्तु समय में परिवर्तन के साथ जिस तरह नारी की स्थिति में बदलाव आया हैए वह समाज में अपनी स्थिति के प्रति सजग एवं सचेत हुई है। स्त्री अपनी पति.परमेश्वर और गुलाम मानसिकता वाली छवि को तोड़कर अपना स्वतंत्र वजूद बनाने में कामयाब हो रही है तथा पुरुष के समान हर कार्य में उसकी सहभागिनी है। स्त्रियों ने कई क्षेत्रों में तो पुरुषों से भी बेहतर तरीके से स्वयं की पहचान बनाई है। आधुनिकताए जागरूकता और बौद्धिकता के कारण आज वह अपने अस्तित्वए भावनाओं और इच्छाओं एवं आकांक्षाओं के प्रति पहले से कहीं अधिक सचेत व सजग हुई है। सुप्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा के अनुसार .ष्हमें न किसी पर जय चाहिएए न किसी से पराजयए न किसी पर प्रभुता चाहिएए न किसी पर प्रभुत्वए केवल अपना वह स्थान व स्वत्व चाहिये जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं हैए परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेगी। ष्ष् कुछ इसी तरह के विचार ग़ज़लकार कुँअर ष्बेचैनष् भी व्यक्त करते हैं। ऐसे लोग जो अपनी बच्चियों की क्षमता और हुनर से अनजान होते हैंए उन लोगों को जागरूक करने के लिए वह कहते हैं .श्किसी दिन देख लेना वो उन्हें अंधा बना देगी ध् घरों में कैद कर ली है जिन्होंने रोशनी सारी वर्तमान समय में नारी घर एवं अपने कार्य.क्षेत्र दोनों की जिम्मेदारी बख़ूबी निभा रही है। स्त्री गृहलक्ष्मी हैए अन्नपूर्णा भी है। उसके इन रूपों का वर्णन दूसरा ग़ज़ल शतक में कुँअर ष्बेचैनष् की ग़ज़ल श्दिलों की साँकलेंश् में कुछ इस तरह किया गया है द्द श्तुम्हारे घर की रौनक ने जो बाँधी हैं अँगोछे में ध् चलो बैठोए पसीना पोंछो और ये रोटियां खोलो। श् आज के समय में भी जिस तरह से नारी का शोषण आये दिन देखने को मिलता है तथा अज्ञानतावश और समाज के कटाक्ष के बाद जो नारी की मनोस्थिति होती है उसे पुरुषोत्तम ष्वज्रष् इस तरह देखते हैं द्द श्जिसकी अस्मत लुटी सरेबाज़ार ध् बन गई वो तो गूँगी.बहरी.सी। श् नारी सदैव ही जीवन के विभिन्न पक्षों को सार प्रदान करती हुई उसे संगीतमय बना देती है और नारी का अभाव उस जीवन को संगीतविहीन बना देता है। इसी बात को महेश जोशी अपने शब्दों में कुछ इस तरह पिरोते हैं . श्गोपियों को छोड़ देगा फिर कभी कान्हा तो सुन ध् राग तेरी बांसुरी का बेसुरा हो जाएगा।

21वीं सदी की नारी के अनुरूप वर्तमान हिंदी ग़ज़ल का मिज़ाज और तेवर बदला है। आज के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विमर्शों एवं अस्मिताओं में स्त्री अस्मिता का विशिष्ट स्थान है। साहित्य का क्षेत्र संवेदना और विचार का क्षेत्र है। श्महापंडित राहुल सांकृत्यायन का कहना है की केवल लिखने मात्र से स्त्रियाँ दिव्यलोक की प्राणी नहीं हो सकतीं वे भी पुरुषों की तरह इसी लोक की जीव हैं। वे पुरुषों के भोग.विलास की सामग्री मात्र नहीं बल्कि उन्हीं की तरह वे अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी रखती हैं और इसी दृष्टि से साहित्य में उनका चित्रण भी होना चाहिए। श् इसी बात के अनुरूप बल्ली सिंह चीमा कामगार स्त्री के बारे में कुछ तरह अपने ज़ज्बात बयां करते हैं द्द श्यह अभावों से उलझती काम करती औरतेंध्अब अंधेरे में मशालें बन जलेगीं औरतें। श् कमलेश भट्ट ष्कमलष् नारी के प्रति श्रद्धाभाव से उसके कोमल भावोंए उसके अस्तित्व और अस्मिता को व्यक्त करते हुए लिखते हैं द्द श्औरत है एक क़तराए औरत ही ख़ुद नदी हैध् देखो तो जिस्मए सोचो तो कायनात सी हैध् संगम दिखाई देता हैए इसमें ग़म ख़ुशी काध् आँखों में है समन्दर होंठों पे एक हँसी हैध् आदम की एक पीढ़ी फिर ख़ाक हो गई हैध् दुनिया में जब भी कोईए औरत कहीं जली हैं। [12,13,15]

भूमंडलीकरण के इस दौर में स्त्री का जीवन केवल चारदीवारी तक ही सिमट कर नहीं रह गया है बल्कि उसे समाज में हर प्रकार के लोगों के साथ व्यवहार करना होता है। नारी को अपने से कम केवल एक पुरुष ही समझता हो ऐसा नहीं है बल्कि सम्पूर्ण पुरुषवादी मानसिकता वाला समाज उसे पीछे धकेलना चाहता है। समाज में केवल पुरुष ही नहीं हैं स्त्री भी है तभी तो मृदुला अरुण कहती हैं .श्मुझको शिकवे तो बहुत से हैं मगर तुझसे नहीं ध् इस शहर में जो रहेगा बेवफा हो जायेगा। श् हर प्रकार की मुसीबतों को झेलने के बाद भी अगर नारी अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए आवाज उठाती है तो समाज उसे कई तरह के ताने देने लगता है। इसी रोष को शगुफ़्ता ग़ज़ल कुछ इस तरह व्यक्त करती हैं . श्बिखर गई थी मेरी ज़िन्दगी ख़लाओं में ध् समेटती हूँ तो नाराज़ यह जहाँ क्यूँ है। श् महाश्वेता चतुर्वेदी वर्तमान समय में घटित हो रही परिस्थितियों के अनुरूप बात करती हैं। साथ ही उनका मानना यह भी है कि स्त्रियों के प्रति हो रहे अत्याचारए व्यभिचार के लिए कहीं न कहीं समाज स्वयं भी जिम्मेदार है द्दश्दुरूशासन है अभी ज़िन्दाए निशाचर मुक्त है अबतक ध् हमें संतान को ष्श्वेताष् वही अर्जुन बनाना है। श्सार रूप में यह कहा जा सकता है कि समकालीनता केवल समय.सापेक्षता ही नहीं बल्कि मूल्य.सापेक्षता की भी बात करती है। किसी भी कृति में युगीन यथार्थ की बात ही उसे समकालीनता की श्रेणी में लाती है। श्समकालीन बोध का अर्थ जीवन की बाह्य परिस्थितियों के बोध तक सीमित न होकर उस यथार्थ की पहचान करना है जिसके सारे अंतर्विरोधों और द्वंदों के बीच से गुजरता हुआ मनुष्य अपने विकास के पथ पर अग्रसर होता है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

इस प्रकार हम देखते हैं कि समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में स्त्री के परम्परागत सौन्दर्यात्मक रूप का वर्णन करने की अपेक्षा उसके जीवन के कटु सत्यों और अन्य अनेक पहलूओं को लेकर भी ग़ज़लकारों ने बात की है। कुछ एक ग़ज़लकार इसका अपवाद हो सकते हैं जो आज भी स्त्री के केवल दैवीय एवं भोग्य रूप को ही अपनी ग़ज़लों में अपनाते हैं। आज स्त्री अपनी अस्मिता की तलाश में पुरुष वर्चस्व के सामने चुनौती खड़ी कर रही है। आज के दौर में नारी के प्रति लोगों के दृष्टिकोण के साथ.साथ परिस्थितियों में भी परिवर्तन हो रहा है नारी की स्वतंत्रताए सुरक्षा और उसके अस्तित्व के लिए आज लेखन के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा रहा है लेकिन एक बात तो निश्चित है कि नारी को स्वयं पुरुष के साथ अपने सहधर्मिणी होने की प्रमाणिकता सिद्ध करनी होगी। समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में स्त्री.अस्मिता तथा अस्तित्ववादी चिंतन पर विचार करने के बाद यह तथ्य सामने आते हैं कि हिन्दी ग़ज़ल ने नारी के प्रति अपना दृष्टिकोण तो बदला है परन्तु अभी भी स्त्री जीवन के कई ऐसे पक्ष हैं जिन्हें ग़ज़ल को अपनी संवेदना के माध्यम से आमजन को साक्षात्कार करवाना है। [17,18,19]

परिणाम

नारी-विमर्श वर्तमान साहित्य-चिन्तन का एक सुचिन्तित आयाम है। नारी-विमर्श और दलित-विमर्श हिन्दी साहित्य के मनीषियों के लिए आज उसी प्रकार लुभावने फैशन बन गए हैं, जिस तरह कभी मार्क्सवाद को हिन्दी मनीषियों ने अपने को प्रतिष्ठित करने के लिए अपनी विशेष पहचान के रूप में एक साहित्यिक फैशन बनाकर अपनाया था। विमर्शन को कभी काल की सीमाओं में बाँधकर नहीं देखा जा सकता। इसे किसी सिद्धान्त विशेष के रूप में भी सीमित नहीं किया जा सकता। यह तो जीवन-संदर्भित चिन्तन का एक सतत् प्रवाह होता है जो विभिन्न माध्यमों से विभिन्न रूपों में प्रकाशित होता है। जीवन के अनुभूतिगत प्रकाश का प्रकाशन ही विमर्शन है। साहित्य भी जीवन के अनुभूतिपरक प्रकाशन का एक माध्यम है। साहित्य की अबाध धारा जीवन के विविध आयामों को निरन्तर विमर्शन की ओर ले जाती है। नारी-विमर्श भी मानव के जीवन-संदर्भित विमर्श का एक आयाम है जिसके सम्यक् स्वरूप तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक हम मानव-जीवन से उस प्रस्थान बिन्दु तक न जायें जहाँ मानव एक संस्कारित जीवन की ओर उन्मुख हुआ है।

मानव का सामाजिक स्वरूप और तज्जन्य सामाजिक व्यवस्था पुरुष और नारी के शारीरिक, मानसिक और भौतिक संदर्भों में सामरस्य हेतु बनी परस्पर सहमति का परिणाम है। मानव-जीवन में सामरस्य की खोज में हुए विमर्श का परिणाम ही समाज की परिवार व्यवस्था है। परिवार के रूप में स्त्री और पुरुष ने अपनी रागात्मिका वृत्ति को आधार बनाकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक ऐसी सामाजिक संस्था का विकास किया जिसका विस्फार ही सामाजिक संरचना और जीवन के अनेक संदर्भों पर आधारित सामाजिक व्यवस्था है जिसका एक प्रधान अंग नारी है। अतः नारी-विमर्श की अवधारणा को हमें परिवार नामक संस्था की स्थापना के संदर्भ से ही देखना होगा।

यह सहज अनुमन्य है कि प्रारम्भ में मानव समाज के प्रादुर्भाव के समय नारी और पुरुष के कार्य-संसार का विभाजन उनकी प्रवृत्तियों और क्षमताओं के आधार पर दोनों की सहमति से ही हुआ होगा। नारी की इस सहमतिजन्य जीवन-अस्मिता के स्वरूप में ही हम आज के नारी-विमर्श के बीज खोज सकते हैं।

भारतीय सामाजिक चिन्तन और साहित्य में नारी-विमर्श की एक अविच्छिन्न श्रृंखला है जिसके आधारभूत तत्त्व नारी-देह की प्राकृतिक संरचना, नारी-मनोविज्ञान और नारी-जीवन के सामाजिक संदर्भ रहे हैं। आज की नारी-विमर्श सम्बन्धी धारा भी इन्हीं आधारभूत तत्त्वों से किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई हैं, नारी-विमर्श के प्रति अतिशय मोह और समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन के नारों से मोहित विद्वानों द्वारा अपनी पहचान बनाने की होड़ ने नारी-विमर्श को भटकाव के रास्ते पर लाकर छोड़ दिया है जिससे मानव-समाज का रचनातंत्रा चरमरा रहा है लेकिन उसके सामने नव निर्माण की कोई दिशा नहीं है।[20,21,22]

प्राचीन भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक साहित्य में नारी की सृजनशक्ति को आधार बनाकर उसकी अर्थवत्ता को स्वीकार करते हुए नारी-विमर्श की नींव रखी गई है। भारतीय संस्कृति के प्राण आगम और निगम दोनों में ही नारी के महत्त्व और जीवन में उसकी अर्थवत्ता को स्वीकार किया गया है। मनुस्मृति भारतीय सामाजिक व्यवस्था का मूलभूत दस्तावेज है। आज के बदलते संदर्भों में उस व्यवस्था पर अनेक प्रश्न-चिह्न लग जाते हैं क्योंकि कोई भी व्यवस्था काल प्रवाह के संदर्भ अप्रासंगिक हो जाती है और होनी भी चाहिए, लेकिन किसी भी व्यवस्था की सामाजिक संचेतना कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती यदि वह मानव-मनोविज्ञान को आधार बनाकर चली है। मनुस्मृति के साथ भी ऐसा ही है, उसमें वर्णित सामाजिक व्यवस्था जिस मानव-मनोविज्ञान को आधार बनाती है वह सामाजिक संरचना के लिए कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती। मानव-मनोविज्ञान की उपेक्षा कर अस्तित्त्व में आयी मार्क्सवादी सामाजिक व्यवस्था की दुर्दशा आपके सामने है। मनुस्मृति में सामाजिक संरचना के लिए नारी के रूप में एक जीवन-दृष्टि है, लेकिन रचनात्मक रूप में, ध्वंसात्मक रूप में नहीं, साथ ही मानव-मनोविज्ञान के गंभीर चिन्तन के बाद।

स्मृतियों में नारी-विमर्श को सामाजिक न्याय का आधार दिया गया है। मनु नारी के जीवन-संदर्भ में नारी को पुरुष के साथ समानता का अधिकार देते हुए कहते हैं-

यो भर्त्ता सा स्मृताङ्गना।[23,25,27]

(जो भर्त्ता है वही भार्या है)

अन्यत्र भी -

स्वेच्छामयः स्वेच्छया च द्विधा रूपो बभूव ह।

स्त्री रूपो बामभागांशो दक्षिणांशः पुमान स्मृतः॥

मनु ही नहीं याज्ञवल्क्य भी परिवार के संदर्भ में नारी-विमर्श को केन्द्र में रखकर कहते हैं -

भर्तृभ्रातृ पितृजाति श्वश्रुश्वसुर देवरैः।

बन्धुभिश्च स्त्रियः पूज्यां।

अर्थात् समाज में नारी के सभी सम्बन्धिओं द्वारा नारी पूज्य है।

केवल स्मृतियों में ही नहीं भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन में भी शक्ति-परिकल्पना और शाक्त-साधना के रूप में नारी शक्ति की प्रकारान्तर से यथार्थ स्वीकृति रही है। देवी भागवत में स्त्री-शक्ति को समस्त कलात्मक जगत् का पर्याय माना गया है -

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः,

स्त्रियः समस्ता सकला जगत्सु।

शक्ति संगम तंत्र में शक्ति रूपा नारी का स्वरूप वर्णन करते हुए नारी-विमर्श को सामाजिक संदर्भ में एक विशिष्ट आयाम के रूप में दिशा दी गई है -

'नारी त्रैलोक्यजननी नारी त्रैलोक्यरूपिणी।

नारी त्रिभुवना धारा नारी देहस्वरूपिणी॥

...

न च नारी समं सौख्यं न च नारी समागतिः।

न नारी सदृशं भाग्यं न नारी सदृशो तपः॥

...

न नारी सदृशो योगो न नारी सदृशं यशः।

न नारी सदृशं मित्रं न भूतो न र्भाविष्यति॥

प्राचीन भारतीय चिन्त-धारा का यह नारी-विमर्श आध्यात्मिक चिन्ताधारा में विलीन होकर जीवन-व्यवहार में नारी-अस्मिता को बहुत सुदृढ़ आधार नहीं दे सका। पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था के विकास के साथ जिस पुरुष मनोविज्ञान का विकास हुआ वह नारी-मनोविज्ञान के प्रकाश में विकसित होने वाले नारी-व्यक्तित्व के सहज विकास में बाधक होता चला गया। इसी का परिणाम है कि सामाजिक व्यवस्था में नारी-जीवन अनेक विद्रूपताओं का शिकार होता चला गया। पुरुष के निरंकुश जीवन और उसकी सामंती मनोवृत्ति ने नारी के अधिकारों का अपहरण करके उसकी सहज अस्मिता पर संकट खड़ा कर दिया। मध्यकाल तक आते-आते नारी-जीवन अनेक विसंगतियों से भर गया था, यही कारण है कि हिन्दी भक्तिकाव्य धारा में नारी-विमर्श सशक्त होकर रचनाओं के रचनातंत्र और रचना-रहस्य के रूप में आया है। सन्त काव्य को छोड़कर हिन्दी भक्तिकाव्य की सम्पूर्ण काव्य-चेतना सामाजिक संदर्भ में नारी-विमर्श को ही केन्द्र में रखकर अपने रचनातंत्र का निर्माण करती है। नारी-जीवन की अस्मिता इस काव्यधारा के रचना रहस्य के रूप में अनुभावित की जा सकती है।[28,29,30]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

मध्यकाल तक नारी-जीवन सामान्यतः मानव-समाज की आधारभूत संस्था परिवार तक ही सीमित था। पारिवारिक संरचना को सुदृढ़ करने के लिए नारी-विमर्श को एक ऐसा मोड़ दे दिया गया जिसमें नारी व्यक्तित्व के सहज विकास की पूर्णतः उपेक्षा थी। नारी-विमर्श की यह धारा नारी-मनोविज्ञान की उपेक्षा कर उसे कृत्रिम आदर्शों पर बने सामाजिक साँचे में ढालने का प्रयत्न कर रही थी। हिन्दी भक्तिकाव्य धारा के नारी-विमर्श की इस विसंगति को पहचाना और अपनी सामाजिक चिन्ता को सामाजिक संदर्भ में विकृत हुए उस नारी-जीवन की ओर मोड़ दिया जिसकी बेड़ियों में कसी हुई नारी बिबस होकर कराह रही थी। [20]नारी-विमर्श की यह करवट हमें हिन्दी सूफी कवियों ने अपनी रचनाओं के रचनातंत्रा के कथा सूत्रों के माध्यम से नारी-जीवन की पीड़ाओं को स्पष्ट रूप से उभारा और उसे आदिकालीन साहित्य में अभिव्यक्त नारी-विमर्श सम्बन्धी उस काव्य-चेतना से जोड़ा जो रासो काव्य में दबे स्वर में दिखाई दे रही थी। हिन्दी रासो-काव्य को यदि नारी-विमर्श की दृष्टि से देखा जाए तो वहाँ जीवन-अस्मिता को लेकर नारी का अन्तर्द्वन्द्व विद्रोह और स्वातंत्रय के लिए छटपटाहट दिखाई देती है। पृथ्वीराज रासो की पद्मावती हो या बीसलदेव रासो की राजमती, पुरुष प्रधानसमाज के निरंकुश तंत्रा को चुनौती देती हुई अपने अस्तित्त्व को प्रतिष्ठित करती हुई नारी की वैयक्तिक पहचान और नारी मुक्ति आन्दोलन की प्रेरणा-सी दिखाई देती हैं। सूफी काव्य धारा के अमर कवि जायसी अपनी रचना पद्मावत में कथा सूत्रों से जिस रचनातंत्रा की रचना करते हैं वह आदि से अन्त तक नारी-विमर्श के चारों ओर घूमता है। पद्मावत में पद्मावती और नागमती का जिन जीवन संदर्भों में रखकर जायसी प्रस्तुत करते हैं उससे नारी अस्मिता को केन्द्र में रखकर नारी-विमर्श को सही दिखा पाने के लिए एक सशक्त आधार मिलता है। पद्मावत में पद्मावती और नागमती की चरित्र-संकल्पना मानव-समाज में विसंगतियों से घिरे हुए नारी-जीवन की व्यथा-कथा है। यह कथा पुरुष-प्रधान समाज में नारी-अस्मिता के संदर्भ में अनेक प्रश्न खड़े करके नारी-विमर्श को गति प्रदान करती है जिसकी गूँज हमें आधुनिक काल की छायावादी कृति कामायनी तक दिखाई देती है। जायसी अपने नारी-विमर्श में नारी-जीवन की चिन्ताओं से ग्रस्त होकर इस संदर्भ में समाधान की व्यंजना भी करते दिखाई देते हैं। यहाँ पद्मावत में अभिव्यक्त नारी-विमर्श को सम्पूर्ण में लेना तो संभव नहीं है लेकिन एक-दो प्रसंगों पर विचार किया जा रहा है जिनको आधार बनाकर पद्मावत की व्याख्या नारी-विमर्श के संदर्भ की जा सकती है। यह हिन्दी के शोधकर्त्ताओं के लिए शोध का एक बिन्दु है।[18,19]

पद्मावत में पद्मावती के प्रसंग में नारी-जीवन को उसके बाल्यकाल से विवाहोत्तर काल तक देखा गया है। पुरुष प्रधान समाज में नारी की अर्थवत्ता पुरुष की भोग्या के रूप में ही देखी जाती रही है। वह अपनी कुण्ठा से ग्रस्त होकर उसे वर्जनाओं के घेरे में बाल्यकाल से ही डालना चाहता है। वह नहीं चाहता कि विवाह से पूर्व किसी भी नारी को काम-भावना का बोध हो। पुरुष का यह सोच नारी के स्वाभाविक मनोविज्ञान के विपरीत है। स्वाभाविक विकास को वर्जनाओं की बेड़ियों में जकड़कर नहीं रोका जा सकता। पुरुष की इसी कुण्ठा का प्रतिफल है कि नारी-पुरुष सम्बन्धों को लेकर समाज में निरन्तर टकराहट की स्थिति बनी रहती है। जायसी पुरुष की इस कुण्ठा और नारी-मनोविज्ञान के अनुपम पारखी हैं। [20,21]वे पद्मावती के विवाह पूर्व जीवन के द्वारा इसी तथ्य की व्यंजना करते हैं जो उनके नारी-विमर्श का एक क्रमबद्ध आयाम है। पद्मावती जब मात्रबारह वर्ष की है उसे पिता द्वारा वर्जनाओं की बेडियों में जकड़ दिया जाता है-

बारह बारह माहै भई रानी। राजै सुना संजोग सयानी।

सात खंड धौराहर तासू। सो पद्मिनी कहँ दीन निवास।

और दीनी संग सखी सहेली। जो संग करै रहसि रस केली।

सबै नवल पिउ संग न सोई। कँवल पास जनु बिगसी कोई।

जायसी जानते हैं कि पुरुष की ये वर्जनाएँ नारी के स्वाभाविक विकास को नहीं रोक सकती। पद्मावती में स्वाभाविक रूप से काम-भावना का विकास होता है और पुरुष की इस मनोवृत्ति को लक्ष्य कर अपने पिता को केन्द्र में रखकर पद्मावती नारी की वेदना व्यक्त करती है -

एक दिवस पद्मावति सनी। हीरामनि तइँ कहा सयानी।[21,22,23]

सुनु हीरामनि कहौं बुझाई। दिन-दिन मदन सतावै आई।

पिता हमार न चालै बाबा। त्रासहि बोलि सकै नहिं माता।

जायसी पद्मावती के द्वारा माता के सन्दर्भ से पति के त्रास से नारी के घुटन भरे जीवन की व्यंजना करते हैं। नारी की क्या ही अजीब नियति रही है कि वह अपने पति को उचित सलाह भी देने में भी डरती है।

नारी-जीवन की यह नियति रही है कि वह हमेशा अपने भविष्य को लेकर अविश्वास और संशय से ग्रस्त रहती है। पितृगृह में रहते हुए जहाँ उसे वह अपना घर नहीं कह सकती, वहीं पतिगृह में होने वाले अनात्मीय व्यवहार को लेकर सदैव आशंकित रहती है। जायसी नारी-जीवन के इस आयाम को भी अपने नारी-विमर्श में बड़े सहज ढंग से उठाते हैं। विवाह के बाद नारी के प्रति ससुराल पक्ष से होने, व्यवहार और अत्याचारों की व्यंजना जायसी की इन पंक्तियों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

'ए रानी! मन देसु विचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी।

जौ लगिं अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू।

पुनि सासुर हम गवनव काली। कित हम कित यह सरवर पाली।

सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेही। दारुन ससुर न निसरै देही।

पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुं काह।

दहुं सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निवाह॥

उपर्युक्त पंक्तियों के वाच्यार्थ पर यदि ध्यान दिया जाए तो इससे जायसी के नारी-विमर्श की उस भावभूमि की व्यंजना है जो नारी की उस नियति से जुड़ी हुई है जहाँ नारी हमेशा से दो परिवारों द्वारा स्वीकृति और अस्वीकृति के बीच झूलती रहती है। नारी का जीवन उस टूटी डाली की तरह है जो पति के परिवार रूपी वृक्ष के साथ हमेशा विजातीय ही बनी रहती है। उसका मन हमेशा अपने जीवन और भविष्य को लेकर आशंकित बना रहता है। नारी-जीवन की यह विसंगति इस शताब्दी में बहुत दूरी तक जस की तस बनी हुई है। यह भव्युला में नारी-मन की यह आशंका और पीड़ा जायसी के चिन्तक और संवेदनशील मन को झकझोरती है और वे पद्मावती के स्वर में नारी-विमर्श के एक आयाम को आधार देते हैं।

एक-दो प्रसंग ही नहीं पद्मावत का पूरा रचनातंत्र अपने वाच्यार्थ में मध्यकालीन भक्तिकाव्य में अभिव्यक्त नारी-विमर्श की एक कड़ी है। रत्नसेन द्वारा पद्मावती की प्राप्ति के लिए नागमती को छोड़कर जाना, अलाउद्दीन और देवपाल प्रकरण जायसी के नारी-विमर्श की अभिव्यक्ति के आयाम के रूप में देखे जा सकते हैं। जो नारी जीवन की नियमित और पुरुष-मनोविज्ञान पर विचार करने के लिए प्रेरक तत्त्व के रूप में हमारे सामने हैं।[23,25]

हिन्दी रामभक्तिकाव्य धारा के पुरोधा तुलसी नारी-विमर्श के अनेक आयामों को लेकर अपनी रामकथा का ताना-बाना बुनते हैं। वहाँ कथा सूत्रा तो परम्परा से गृहीत हैं लेकिन रचनातंत्रा और रचना रहस्य तुलसी का अपना है। वे नारी-अस्मिता से जुड़े विविध प्रसंगों को उठाकर नारी-विमर्श की धारा को कई आयाम देते हैं। सीता स्वयंवर, सीता का वनगमन, सूर्पणखा प्रसंग, सीता-हरण प्रसंग, अहल्या प्रसंग, तारा, मन्दोदरी आदि के प्रसंग नारी-विमर्श के विविध आयामों की बड़े सशक्त ढंग से व्यंजना करते हैं। तुलसी पर नारी विरोधी होने का आरोप लगाने वाले तुलसी की काव्य-चेतना को नहीं देख पाते क्योंकि उनकी आँखों पर तो परम्परा-विरोध की पट्टी बँधी हुई है। वे नहीं देखते कि तुलसी किस प्रकार नारी के शील की जकड़न की कसमसाहट नारी के द्वारा ही व्यक्त करते हैं। तुलसी जानते हैं कि शील के नाम पर नारी की मानसिकता को किस प्रकार जकड़ दिया है कि उसके मन लड़की होने का एहसास उसे हमेशा विवशता का बोध कराता है। यहाँ तक कि अपने जीवन-साथी के वरण के लिए भी वह स्वतंत्र नहीं है। वरण तो दूर की बात अपने मन की बात वह किसी से कह भी नहीं सकती कि उसे कैसा वर चाहिए। सीता-स्वयंवर प्रकरण स्वयंवर प्रथा का एक मजाक-सा है। स्वयंवर में लड़की द्वारा अपने पति का स्वयं ही वरण करने की अवधारणा निहित है। तुलसी इस अवधारणा को अच्छी तरह जानते हैं। वे इस प्रकरण को रामकथा में उठाते हैं। गीतावली में तुलसी की सीता अपने होने वाले पति के सम्बन्ध में अपनी कामना प्रकट करना चाहती है लेकिन लड़की होने का बोध और तज्जन्य शील के बंधन में जकड़ी उसकी विवशता उसे अपनी कामना व्यक्त करने से रोक देती है -

पूजा पारवती भले भाय पाँय परिकै।

सजल, सुलोचन, सिथिल तनु पुलकित,

आवै न वचन, मन रह्यौ प्रेम भरिकै।

अंतरजामिनी, भवभामिनी, स्वामिनी सौं हैं,

कही चाहौं बात, मातु अन्त तौ हौं लरिकैं।

रामचरितमानस की रामकथा का धनुष यज्ञ प्रसंग नारी-जीवन की नियति को लेकर तुलसी के नारी विमर्श का एक आयाम है। तुलसी की रामचरित मानस की सीता राम से विवाह करना चाहती है लेकिन पिता की असंगत हठ को लेकर शंकित मन में उठता उसका करुण क्रन्दन नारी-जीवन की विवशता की कथा कह रहा है -

जानि कठिन सिव चाप विसूरति। चली राखि उर स्याम सुम्रति॥

तुलसी का नारी-विमर्श केवल सीता के मन के क्रन्दन की अभिव्यक्ति से ही संतुष्ट नहीं होता। वह नारी में छिपी विद्रोही भावना को सीता की माता के स्वर में व्यक्त करते हैं। सीता की माता राजा जनक की अविवेकपूर्ण प्रतिज्ञा से सीता के जीवन के प्रभावित होने की आशंका से पति के प्रति विद्रोही स्वर में मुखर हो उठती है-[27,28]

सखि सब कौतुक देखनिहारे। जेउ कहावत हितू हमारे॥

कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठभल नाहीं।

...

भूप सयानप सकल सिरानी। सखि विधि गति कछु जात ना जानी॥

रामकथा के उपर्युक्त प्रसंग तो तुलसी के नारी-विमर्श की भूमिका भर कहे जा सकते हैं। रामकथा के पूरे रचनातंत्रा में तुलसी के नारी-विमर्श को यदि देखना है तो उसमें नारी जीवन संदर्भों पर गंभीरता से शोध करनी होगी।

हिन्दी भक्तिकाव्यधारा में कृष्णकाव्य का रचनातंत्र तो एक प्रकार से नारी-अस्मिता की भावभूमि का पर्याय कहा जा सकता है। यदि आध्यात्मिक आवरण को हटाकर कृष्ण कथा को सामाजिक संरचना के संदर्भ में देखा जाए तो वहाँ पुरुष-मनोविज्ञान और नारी-मनोविज्ञान के संदर्भ में नारी-जीवन की अस्मिता का ऐसा संसार दिखाई देता है जिसमें नारी जीवन की मुस्कराहट तो बहुत कम है लेकिन उसकी कराह ही अधिक दिखाई देती है। उसमें क्रमबद्ध रूप में पुरुष-मनोविज्ञान के जाल में फँसती हुई नारी पश्चाताप और करुण क्रन्दन ही अधिक दिखाई देता है जो नारी-विमर्श का एक यथार्थ परक आयाम है। सूरसागर की कृष्ण कथा ही नहीं साहित्य लहरी का नायिका भेद भी सूर के नारी-विमर्श का एक आयाम है। यहाँ हम कुछ उदाहरणों से सूर के नारी-विमर्श पर दृष्टिपात करेंगे।

सूरसागर में भ्रमरगीत प्रकरण नारी-विमर्श का एक सशक्त बिन्दु है। भ्रमरगीत प्रकरण में गोपियों के रूप में यदि नारी-जीवन को देखा जाए तो वह समाज का एक ऐसा यथार्थ है जो आज भी हमारे सामने एक ज्वलंत समस्या के रूप में विद्यमान है। सूर कृष्ण के द्वारा गोपियों की उपेक्षा को वर्ग-चेतना के संदर्भ में देखना चाहते हैं। सूर की गोपियाँ कृष्ण को दो रूपों में देखती हैं। १. गोकुल के कृष्ण-जो गोपाल है, उनके ग्रामीण परिवेश के साथी हैं। २. मथुरा के कृष्ण जो राजा है - यादवनाथ हैं। गोकुल से मथुरा जाकर कृष्ण का वर्ग बदल जाता है। वह सामान्य ग्वाले से राजा हो जाते हैं और वहाँ जाकर एक नारी कुब्जा को अपना लेते हैं। कुब्जा तन से कुब्जा हो या न हो लेकिन वह मन से कुब्जा है ही, जो गोपियों के कृष्ण को गोपियों से छीन लेती है। कृष्ण भी राजा होकर गोपियों को छोड़ देते हैं और पराकाष्ठा तो तब होती है, जब वे उद्धव के द्वारा गोपियों को दूसरे आलम्बन के वरण का संदेश देते हैं।

निष्कर्ष

सूर के नारी-विमर्श की व्यंजना इस बिन्दु पर निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती है -

१. कहौ कहाँ तैं आये हौ।

जानति हौं अनुमान मनो तुम जादवनाथ पठाए हौ॥

...

मधुवन की कामिनी मनोहर तहँहिं जाहु जहँ भाए हौ॥

२. हमको जोग, भोग कुब्जा को काके हिमै समात।[28,29]

नारी-विमर्श के संदर्भ में यदि सूर के इन प्रकरणों को देखा जाए तो आज भी ऐसे धूर्त पुरुष मिलते हैं जो पढ़-लिख अच्छा पद प्राप्त करते ही अपनी अशिक्षित ग्रामीण पूर्व परिणीता को धोखे में छोड़कर उसके विश्वास को तोड़ते हुए उसे उसकी नियति पर छोड़ देते हैं इसके साथ समाज में ऐसी कुब्जाएँ भी है नारी के अधिकारों पर आघात करके ऐसे पुरुष को अपनी धूर्तता के जाल में फँसा लेती हैं और हद तो तब होती है जब ऐसी स्त्री-पुरुष नारी के प्रति संवेदनापूर्ण लेखन करते हुए बेशर्मी के साथ नारी-विमर्श का झण्डा थाम लेते हैं।

सूर की साहित्यलहरी सूर के नारी-विमर्श को एक नया आयाम देती है। साहित्य लहरी के वर्ण्य-विषय के केन्द्र में नायिका-भेद है। नायिका-भेद में स्वकीया नायिका का स्वरूप नारी का पूर्ण आदर्श माना गया है। सूर नारी-विमर्श के धरातल पर खड़े होकर इस रूप में पुरुष द्वारा थोपे गए आदर्श की स्वीकृति-अस्वीकृति के बीच झूलते दिखाई देते हैं। सूर की राधा के स्वकीया के रूप में चित्रित आदर्श पर एक गोपी व्यंग करती हुई कहती है -

राधे कियौ कौन सुझाव।

प्रानपति वेदन विभूषित सुन गुन चितचाव॥

भानुवंसी रस सुधागृह हैं न निकसन पाव।

रजनिचर गुन जान....॥

गोपी राधा के रूप में नारी द्वारा पुरुष के लिए एक पक्षीय सर्वतो भावेन समर्पण पर प्रश्न चिह्न लगाती है। गोपी का यह प्रश्न चिह्न नारी-जागरण की भूमिका के लिए सूर के नारी-विमर्श की रूपरेखा की एक दिशा है।

साहित्य लहरी में नायिका-भेद के प्रसंग से सूर ने नारी-जीवन और नारी-अस्मिता से सन्दर्भित अनेक प्रश्न उठाकर नारी-विमर्श को यथार्थ दिशा देने का प्रयास किया है। पुरुष द्वारा अल्पवयस्यक बालिका के यौन-शोषण की समस्या को सूर मुग्धा नायिका के एक भेद अज्ञात यौवना के प्रसंग से उठाते हैं। काम भावना से प्रेरित पुरुष यह नहीं देखता कि जिस पर कुदृष्टि डाल रहा है वह शारीरिक और मानसिक रूप से काम-संदर्भों के लिए उपयुक्त है या नहीं। साहित्य लहरी के निम्न पद में नारी-जीवन से संबंधित इस ज्वलंत समस्या की व्यंजना करते हुए सूर पुरुष द्वारा विवेक से काम लेने की सलाह देते हैं -

हरि उर पलक धारौ धीर।

हित तिहारे करत मनसिज सकल सोभातीर॥

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि मध्यकालीन हिन्दीभक्ति काव्य धारा आध्यात्मिक चेतना पर आधारित कोरा भाव-विलास ही नहीं है, उसमें कहीं वाच्यार्थ में तो कहीं प्रतीकार्थ में सामाजिक चिन्ताओं का सन्निवेश है और उसमें भी विशेषकर नारी जीवन की विषमताओं का, जो नारी-विमर्श की धारा को युगानुरूप निरन्तर गति देती हैं। हिन्दी के शोध कर्त्ताओं और विद्वानों से भक्त साहित्य में नारी-विमर्श को एक अविच्छिन्न कड़ी के रूप में देखे जाने की अपेक्षा की जा सकती है।[30]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "एक नया हिंदुस्तानी-अंग्रेजी शब्दकोश" । dsalsrv02.uchicago.edu . 1879 . 9 सितंबर 2018 को लिया गया .
2. ^ऊपर जायें:ए बी "ग़ज़ल का अंग्रेजी में अर्थ"। रेख्ता शब्दकोश. 2023-02-10 को पुनःप्राप्त.
3. ^ "ग़ज़ल" । काव्य फाउंडेशन . 9 सितंबर 2018 । 9 सितंबर 2018 को लिया गया .
4. ^ऊपर जायें:ए बी सी डी ई एफ जी एच जलाजेल, डेविड। "ग़ज़ल का एक संक्षिप्त इतिहास"। ग़ज़ल पेज जर्नल। 17 मई 2021 कोमूलसे संग्रहीत। 26 मार्च 2019को लिया गया।
5. ^ "उर्दू मार्क के प्रकार: ग़ज़ल" संग्रहीत 2020-11-02 पर वेबैक मशीन , "उर्दू मार्क", 8 अगस्त, 2012
6. ^ "ग़ज़ल - इस्लामी नाम का अर्थ - मुसलमानों के लिए बच्चों के नाम" ।
7. ^ऊपर जायें:ए बी "لزغ"। मार्च 17, 2023। मूल16 दिसंबर, 2020 कोसंग्रहीत
8. ^ "ग़ज़ल - इस्लामी नाम का अर्थ - मुसलमानों के लिए बच्चों के नाम" ।
9. ^ऊपर जायें:ए बी सी डी ई एफ कांडा, केसी (1992)। 17वीं से 20वीं सदी तक उर्दू ग़ज़ल की उत्कृष्ट कृतियाँ । स्टर्लिंग प्रकाशन। पी। 2.आईएसबीएन 978-81-207-1195-2.
10. ^ उच्चारण के लिए ऑक्सफोर्ड बीबीसी गाइड
11. ^ ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी
12. ^ सेल्स, माइकल (1996)। प्रारंभिक इस्लामी रहस्यवाद . न्यूयॉर्क: पॉलिस्ट प्रेस. पृ. 56-61. आईएसबीएन 9780809136193.
13. ^ अहमद, सफदर (जून 2012)। "साहित्यिक रूमानियत और इस्लामी आधुनिकता: उर्दू कविता का मामला"। दक्षिण एशिया: दक्षिण एशियाई अध्ययन जर्नल । 35 (2): 434-455। डीओआई : 10.1080/00856401.2011.633300 । आईएसएसएन 0085-6401 . एस2सीआईडी 144687955 ।
14. ^ प्रिटचेट, फ्रांसिस डब्ल्यू., 1947- (2004)। जागरूकता का जाल: उर्दू कविता और उसके आलोचक । कथा पुस्तकें. आईएसबीएन 81-87649-65-8. ओसीएलसी 419075128 ।
15. ^ "ग़ज़ल - इस्लामी साहित्य" । 9 सितंबर 2018 को लिया गया .

16. ^ डेफ़, शॉकी। तारीख अल-अदब अल-इस्लामी: 2 - अल-अस्र अल-इस्लामी (अरब साहित्य का इतिहास: 2- इस्लामी युग)। काहिरा: दार अल-मा`रीफ़। 1963. (पृ. 347-348)
17. ^ "फ़ारसी - बांग्लापीडिया" । En.banglapedia.org. 15 फरवरी 2015. 11 सितंबर 2017 को मूल से संग्रहीत । 22 सितंबर 2017 को लिया गया ।
18. ^ "फ़ारसी - बांग्लापीडिया" । 2 जनवरी 2017 को मूल से संग्रहीत ।
19. ^ अर्नोल्ड, एलिसन (2000)। विश्व संगीत का गारलैंड विश्वकोश । टेलर और फ्रांसिस. पी। 851. आईएसबीएन 0-8240-4946-2.
20. ^ सोम, शोवन (2002)। अतुल प्रसाद सेनेर श्रेष्ठ कबिता । भरबी. पी। 142.
21. ^ हुसैन, अज़फ़र. "काज़ी नज़रुल इस्लाम को फिर से पढ़ना" (वीडियो व्याख्यान) । यूट्यूब । 2021-11-10 को मूल से संग्रहीत । 15 जुलाई 2016 को लिया गया ।
22. ^ अली, सरवत (21 सितंबर 2014)। "बंगाल का स्वाद" । द न्यूज इंटरनेशनल । रविवार को समाचार। 28 जून 2018 को मूल से संग्रहीत । 28 जून 2018 को लिया गया . नजरूल इस्लाम की ये बंगाली गजलें फिरोजा बेगम ने भी गाई थीं
23. ^ इस्लाम, मोहम्मद शफीकुल (25 मई 2007)। "नजरुल: मानवता का एक उत्साही प्रेमी" । द डेली स्टार । 4 फरवरी 2018 को मूल से संग्रहीत । 28 जून 2018 को लिया गया . वह अपने गीतों के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं, जिसमें उन्होंने बंगाली ग़ज़ल जैसे नए रूपों की शुरुआत की
24. ^ चौधरी, दिलीप (22 सितंबर 2006)। "नजरुल इस्लाम: बंगाल के अद्वितीय गीतकार और संगीतकार" । प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार । 5 नवंबर 2002 को मूल से संग्रहीत । 22 सितंबर 2006 को पुनःप्राप्त . ऑल्ट यूआरएल 2018-06-28 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत किया गया
25. ^ हट्टंगडी, विद्या। "कुछ कालजयी ग़ज़लें सुनें" [स्थायी मृत लिंक] , "द्रविद्याहट्टंगडी", 16 अगस्त, 2018
26. ^ "ग़ज़ल गायक" संग्रहीत 2020-11-10 पर वेबैक मशीन , "उर्दू दुनिया"
27. ^ शायरी नेटवर्क ।
28. ^ "हमजा सिंवारी भट्टा - हम सभी नेपाली" । www.weallnepali.com । 2016-06-21 को पुनःप्राप्त .
29. ^ आनंदी, सीता राम। भारत में महिलाएँ: एक सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास । पी। 215.
30. ^ कर्ष (4 जून 2018)। "ग़ज़ल" का विकास - 21वीं सदी में कविता का सबसे लोकप्रिय रूप" । मध्यम .

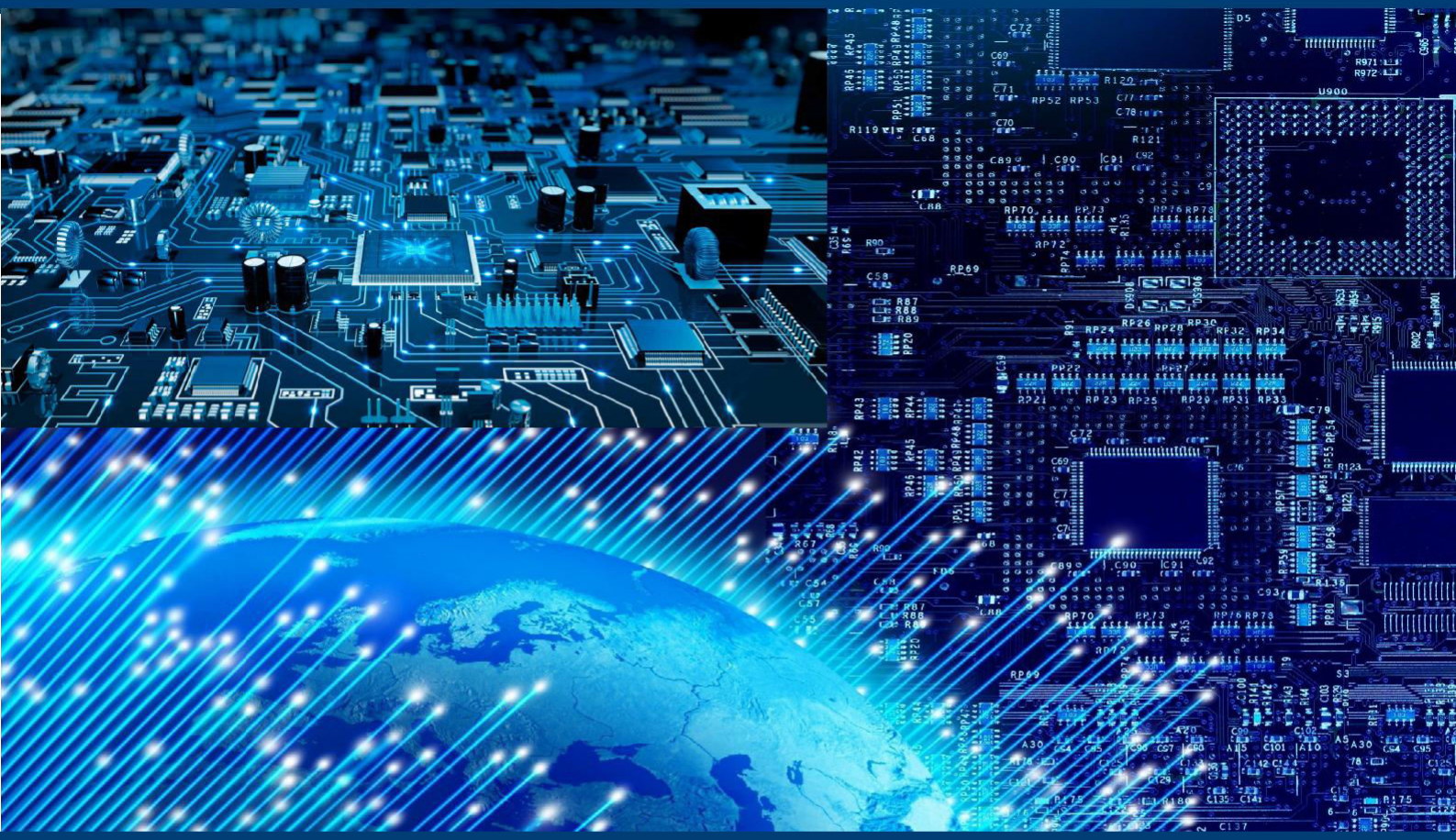

IJARASEM

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com